भोजनसाथी श्री अक्षयभूपेतम स्वामिनारायण संस्था
सतनाग दिष्टम परिश्रम
सतनाग ग्रंथ : दृष्टीय अंक
प्रथम - १
सवारे ८ वी १२] संवार, १५ जुलाई, २००१
कृपा गुप्ता : १००

नाम : रघुधर भारवे आपेक्षा अंको के ने प्रकाश गुप्ता दसावे छे.

(‘भवनामुण’ ने आपारे)
प्र. १. (अ) नीङ्गेनांकी कोईपरं प्रथा वैद्यक्तिक वाक्य, दशामं वं विषय पर

मुदासर नेम बरो.

१. श्रीगृहा भिन्नतना दशासते वतन पाबतमा वियोड़ : विवास करो.

२. ज़र्ज़े के मोर्ले संग हुगमी रेनारने छ बाबलो.

३. भुक्ततना दशासते असापतर्य भावत अने तेनी माणिनो औताप.

४. सतयम्यतना विण्डानीं दशासते निकलस.

५. अं.२१ उपारे श्रीहिनो मत.

(ब) नीङ्गेनां व्यन्त्रोणी भूमि करो अने तेना व्यन्त्रांतनो क्षमां टोको.

१. 'नेम जे संतेनी .................... रीते बे 'ज नंकिष.'

२. 'तिंदी वेतीयचर्या संता ........................ सम भाव पढे छे.'

३. 'अने अग्नी रीते प्रथम क्षुद्र ........................ नींकें ज रहे छे.'

४. 'तिंदे मोतानु दण्डमा खशुखु......................................... हासुनुचाल चर्ग रहेकु.'

५. 'तिंदे दिनानीं पुंच्छुटु ......................... हड़ पामो नंकिष.'

(ग) नीङ्गेना कोईपरं अंक विषय पर अव्यासकर्मरा व्यन्त्रांतनो

क्षमां नेमी व्यन्त्रांतना ज श्लाकोमा भे अव्यन्त्रो टोको :

(१) सतालो भमिना

(२) निवध